2

कोई आप से प्रेम करता है

इस पाठ में उस पर ज़ोर दिया गया है जो *आपको* करना चाहिए, परन्तु मैं यह प्रभाव नहीं छोड़ूंगा कि जो हम किसी भी प्रकार से करते हैं उसकी तुलना उससे की जाए जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है। यह पाठ परमेश्वर के प्रेम के बारे में है। यद्यपि यह इस विषय को कमज़ोर नहीं करेगा, पर कम से कम आपको इस रोमांचक विषय से परिचित करवा देगा।

पाप में खोया हुआ

इससे पहले कि हम परमेश्वर के प्रेम की प्रशंसा करें, हमें उस प्रेम के लिए अपनी आवश्यकता को देखना होगा। परमेश्वर द्वारा अपना प्रेम दिखाने से पहले मनुष्यजाति पाप में खोई हुई थी, वह हताश और असहाय थी।

जब मैं कहता हूं ''पाप में खोया हुआ,'' तो मैं व्यक्तिगत पाप की बात कर रहा होता हूं, आदम के पाप की नहीं। अनेक लोगों का मानना है कि एक बच्चा आदम के पाप के दोष के साथ पैदा होता है। तथापि, बाइबल सिखाती है कि एक बच्चा शुद्ध और पवित्र पैदा होता है। यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे'' (मत्ती 18:3)। पुनः, बच्चों की बात करते हुए, उसने कहा कि ''स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है'' (मत्ती 19:14)।

यहेजकेल नबी ने ज़ोर देकर कहा था कि हर व्यक्ति अपने ही पापों के लिए ज़िम्मेदार है, अपने पिता के पापों के लिए नहीं :

> जो प्राणी पाप करे वही मरेगा, न तो पुत्र पिता के अधर्म का भार उठाएगा और न पिता पुत्र का; धर्मी को अपने ही धर्म का फल, और दुष्ट को अपनी ही दुष्टता का फल मिलेगा (यहेजकेल 18:20)।

आपको मीरास में अपने पिता के पापों के *परिणाम* मिल सकते हैं, परन्तु आप अपने पिता के पाप का *दोष* मीरास में नहीं पा सकते।[1] हम आदम के पाप का परिणाम भुगतते हैं

जो कि शारीरिक मृत्यु है (उत्पत्ति 3:3) परन्तु हमें उसके पाप का दोष मीरास में नहीं मिलता।

जन्म के समय हम शुद्ध और पवित्र होते हैं। बड़े होने के साथ-साथ हमें भले-बुरे का ज्ञान हो जाता है। जब हम गलत करना चुनते हैं, तो वह पाप होता है। यह ''ज़िम्मेदारी की उम्र'' अलग-अलग लोगों के लिए, पृष्ठभूमि, शिक्षा, और व्यवहार के कारण अलग-अलग उम्र में आती है। यहूदियों ने यह उम्र लगभग तेरह वर्ष निर्धारित की थी,[2] परन्तु इसमें व्यक्ति-विशेष के लिए कुछ वर्षों की भिन्नता हो सकती है।

इस कारण, जिस व्यक्ति की मृत्यु बालकपन में नहीं होती, वह पाप करेगा और इस प्रकार वह एक पापी है। ''कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। ... सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:10, 23)।

हमें ''पाप'' शब्द की परिभाषा को जानने की आवश्यकता है। अनुवादित यूनानी शब्द ''पाप'' का अर्थ है ''निशाने से चूक जाना।'' जब एक यूनानी तीरन्दाज़ लक्ष्य से चूक जाता था, तो कहा जाता था कि उसने ''पाप किया'' है। इसी बात को आध्यात्मिक रूप से समझने के लिए, ''निशाने'' (लक्ष्य) को परमेश्वर की इच्छा के रूप में मानें। रोमियों 3:23 में यह घोषणा करने के बाद कि ''सब ने पाप किया है'' के साथ जोड़ा गया है ''और परमेश्वर की महिमा *से रहित* हैं।''

बाइबल में ''पाप'' के लिए एक और शब्द ''अपराध'' इस्तेमाल किया गया है। पिछले पाठ में, हमने ध्यान दिया था कि व्यवस्था ''अपराधों के कारण बाद में दी गई'' (गलतियों 3:19)। ''अपराध'' शब्द (यूनानी शब्द के समान) का मूल अर्थ है ''आगे निकल जाना।''[3] एक आयत जो इस विचार को व्यक्त करती है, वह 2 यूहन्ना 9क है: ''जो कोई *आगे बढ़ जाता है,* और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं है।'' अंग्रज़ी के KJV में इसका अनुवाद इस प्रकार से किया गया है ''जो कोई अपराध करता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं है।''

तीरन्दाज़ी के उदाहरण को जारी रखने के लिए, हम अपराध को परमेश्वर की इच्छा के *ऊपर से* निकलते या तीर को लक्ष्य के *ऊपर* से होकर गुज़रने के रूप में समझ सकते हैं।

कई बार लोग ''भूल चूक के पाप'' की बात करते हैं। ''भूल का पाप'' वह है जिसमें हम वह करते हैं जो हमें नहीं करना चाहिए (उन सीमाओं से आगे निकल जाना जो परमेश्वर ने हमारे लिए ठहराई हैं)।[4] ''चूक का पाप'' वह करने में नाकाम होना है जो हमें करना चाहिए (परमेश्वर की अपेक्षाओं से गिर जाना)।

''पाप'' के लिए एक और शब्द है ''अधर्म।''[5] याकूब 3:6 ''अधर्म के संसार'' की बात करता है। अनुवादित शब्द ''अधर्म'' में अन्याय की बात मिलती है। यशायाह 53:6 में अधर्म की एक अभिव्यक्ति मिलती है: ''हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।'' वाक्यांश ''अपना-अपना मार्ग लिया'' पर ध्यान कीजिए: यह परमेश्वर के मार्ग के बजाय किसी के अपने ही मार्ग में जाने की बात है। यदि हम तीरन्दाज़ी के उदाहरण में इसे लागू करें, तो हम तीरन्दाज़ को, निशाना लगाते समय लक्ष्य को पूरी तरह नज़रंदाज़ करते हुए चित्रित कर सकते हैं।

कुछ लोगों के लिए, यह बहुत बड़ी बात नहीं है कि वे परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए ''निशाना साध रहे'' हैं परन्तु असफल हैं। परन्तु, उनकी मुश्किल यह है कि वे परवाह नहीं करते कि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं या नहीं। वे अपनी इच्छानुसार जीने के लिए दृढ़ संकल्प हैं। वे ढीठ होकर अपने ही मार्ग पर चलते हैं।

ज़रा रुकिए और पाप करने के इन तीन सामान्य ढंगों के विषय में विचार कीजिए: जो कुछ हमें करना चाहिए, उसे करने में असफल होना, जो हम जानते हैं कि गलत है उसे करना, परमेश्वर की इच्छा को पूरी तरह से नज़रंदाज़ करना। उसमें यह तथ्य जोड़ लें कि हम *कामों* (याकूब 4:17), *बातों* (मत्ती 12:37), और *विचारों* (मत्ती 15:19) से पाप कर

सकते हैं। इन सब को इकट्ठा करके, विचार कीजिए कि ये सच्चाइयां आप के जीवन पर किस प्रकार से लागू होती हैं:

- क्या आप कभी वह काम *करने* में नाकाम हुए हैं जो आपको करना चाहिए?
- क्या आपने कभी ऐसी बातें *कही* हैं जो आपको नहीं कहनी चाहिए थीं?
- क्या आपके विचार कभी परमेश्वर की इच्छा के विपरीत हुए हैं?

संक्षेप में, क्या आप यह मानने के लिए तैयार हैं कि आप एक पापी हैं? जब तक आप अपने खोए होने को मानते नहीं, तब तक आप उद्धार पाने के लिए तैयार नहीं हैं।

अपने पाप भरे जीवन का अंगीकार करना आवश्यक है। यह समझना भी आवश्यक है कि *आप* अपने पाप के दोष को किसी भी प्रकार मिटा नहीं सकते। एक आम गलतफ़हमी है कि यदि किसी की भलाई उसके जीवन की बुराई से बढ़कर है, तो भलाई बुराई को ढांप लेती है। दुर्भाग्य से, कितनी भी भलाई हो वह इस तथ्य की कि हम ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी है, किसी भी प्रकार से भरपाई नहीं कर सकती।

कल्पना कीजिए कि आप अपने बिलों का भुगतान नहीं कर रहे और आप पर कर्ज़ का भारी बोझ पड़ गया है। एक दिन, आप फ़ैसला लेते हैं, ''यह तो बेवकूफ़ी है। अब से, मैं सभी बिलों का भुगतान समय पर करूंगा।'' अब कल्पना कीजिए कि आप ईमानदारी से हर साल, बिल चुका देते हैं। यह बहुत अच्छी बात होगी ... परन्तु आपके सिर पर जो कर्ज़ पहले था उसका क्या हुआ? आपके वर्तमान बिलों का भुगतान करने का अर्थ यह नहीं कि आपका पिछला कर्ज़ चुक गया।

इसी प्रकार, जब आप भलाई करते हैं, तो वह सराहनीय है, परन्तु बाइबल सिखाती है कि वह तो आप को करनी ही ''चाहिए'' (देखिए लूका 17:10)। यह किसी भी प्रकार से उस सारे समय की भरपाई नहीं करती जिसमें आपने वह *नहीं* किया जो आप को ''करना चाहिए'' था।

क्योंकि हम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया है, हमें अपने पापों के बदले क्या मिलना चाहिए? बाइबल इस बारे में स्पष्ट करती है: ''पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23क)। जिस प्रकार से बाइबल में ''मृत्यु'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है उससे तात्पर्य है–*अलग* होना। शारीरिक मृत्यु देह से आत्मा का अलग होना है (देखिए याकूब 2:26)। आत्मिक मृत्यु मनुष्य का परमेश्वर से अलग होना है–पाप के कारण (यशायाह 59:1, 2)। अनन्त मृत्यु परमेश्वर से अनन्त काल के लिए अलग होना है (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

पाप के कारण हमारे जीवन में आत्मिक मृत्यु आती है (इफिसियों 2:1)। यदि यीशु के लोहू के द्वारा पाप न मिटाया जाए, तो वह अनन्त: मृत्यु का कारण बन जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:14, 15)। यीशु ने लोगों को बताया कि यदि वे अपने पापों में मर जाएं, तो वे वहां नहीं जा सकते, जहां वह जा रहा था (अर्थात, स्वर्ग में; देखिए यूहन्ना 8:24; 14:2–6)।

आज संसार की बहुत सी आवश्यकताएं हैं: शान्ति, कैंसर का इलाज, भूखों के लिए भोजन। परन्तु, संसार की सब से बड़ी आवश्यकता है, परमेश्वर। जब तक कोई मनुष्य यह नहीं मानता कि वह एक पापी है और यह कि वह अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकता, तब तक उसकी आत्मा के लिए कोई आशा नहीं है। मैं दोहराता हूं कि जब तक *आप अपने* खोए होने की दशा को मानते नहीं, तब तक आप अपने उद्धार के लिए तैयार नहीं हैं।

यदि आप अपने उद्धार की आवश्यकता को सचमुच समझते हैं, तो प**ढ़ते रहिए।**

अनुग्रह से उद्धार

अनुवादित शब्द ''अनुग्रह'' का सम्बन्ध ''दान'' शब्द से है। ''अनुग्रह'' वह होता है जो दान के रूप में दिया जाता है, अन्य शब्दों में, कुछ ऐसा जिसे कमाया न गया हो। ''अनुग्रह'' को कभी-कभी ''अनर्जित कृपा अर्थात ऐसी दया जिसके हम योग्य न हों'' के रूप में भी परिभाषित किया जाता है। एक परिभाषा जो मुझे पसन्द है वह है ''जिसकी आपको आवश्यकता तो है, परन्तु आप उसके हक़दार नहीं हैं।''

क्योंकि हम पापी हैं, हमें उद्धार की *आवश्यकता* है परन्तु हम उद्धार के *हक़दार* नहीं हैं। इस कारण, यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं, तो यह परमेश्वर के *अनुग्रह* के द्वारा ही हो सकता है। इफिसियों 2:8 और अन्य आयतें यह ज़ोर देती हैं कि मसीहियों का उद्धार ''अनुग्रह ही से'' हुआ है।

परमेश्वर के अनुग्रह की सबसे बड़ी विशेषता उसके पुत्र का दान है। आपने यह सुनहरी आयत सुनी होगी: ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' (यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया-परमेश्वर ने *आप से* इतना प्रेम किया कि आपके पापों के लिए वह अपने पुत्र यीशु का बलिदान देने के लिए तैयार हो गया। मेरी तीन पुत्रियां और दो नाती हैं, परन्तु मैं उनमें से किसी को भी देना नहीं चाहूंगा। परमेश्वर का केवल एक ही पुत्र था, परन्तु उसने उसे भी हमारे लिए दे दिया।

पौलुस ने लिखा था, ''क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा ... परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:6-8)।

यीशु इस संसार में अनेक कारणों से आया: हमें परमेश्वर की शिक्षा देने के लिए (यूहन्ना 3:2), लोगों की सहायता करने के लिए (मत्ती 20:28), उसके पीछे चलने के लिए और हमें एक सम्पूर्ण उदाहरण देने के लिए (1 पतरस 2:21)। तथापि, सबसे बढ़कर, वह ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया'' था (लूका 19:10)। उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, उसका क्रूस पर मरना आवश्यक था: ''... बिना लोहू बहाये क्षमा नहीं होती'' (इब्रानियों 9:22)।

जब तक यीशु अपना लोहू न बहाता तब तक क्षमा क्यों नहीं हो सकती थी? इस प्रश्न का उत्तर परमेश्वर के स्वभाव में मिलता है। क्योंकि हम परमेश्वर को पूरी तरह से समझ

नहीं सकते,[6] इसलिए हम पूरी तरह से उसकी योजनाओं और उद्देश्यों को नहीं समझ सकते (1 कुरिन्थियों 2:16) जिसमें वे सब बातें हैं जो क्रूस की योजना में शामिल थीं। फिर भी, इस प्रश्न पर विचार करना बहुत आवश्यक है।

इन विचारों पर ध्यान कीजिए: परमेश्वर धर्मी है (भजन संहिता 89:14)। पवित्र परमेश्वर होने के कारण, वह पाप को सहन नहीं कर सकता (यशायाह 6:3); धर्मी होने के लिए, उसे पाप को दण्ड देना आवश्यक है। हमें कृतज्ञ होना चाहिए कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है (1 यूहन्ना 4:8)। यदि वह केवल न्याय करने वाला परमेश्वर ही होता, तो हम सभी का नाश हो जाता और हम खोए हुए होते, क्योंकि हम सभी ने पाप किया है। प्रेम करने वाला परमेश्वर होने के कारण, वह नहीं चाहता कि किसी का भी नाश हो (2 पतरस 3:9); सो उसने हमारी जगह दु:ख सहने के लिए अपने पुत्र को भेज दिया। विश्वास से, मैं यह तथ्य स्वीकार करता हूं कि जब यीशु क्रूस पर मरा, तो उसने मेरे और आपके पापों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया।

> ... पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया (1 कुरिन्थियों 15:3)।
>
> जो पाप से अज्ञात था, उसी [यीशु] को उस [परमेश्वर] ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (2 कुरिन्थियों 5:21)।
>
> हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया (यशायाह 53:6)।

यदि यीशु केवल मनुष्य ही होता, चाहे सम्पूर्ण मनुष्य भी होता, तो उसकी मृत्यु कभी भी पाप का प्रायश्चित नहीं हो सकती थी। केवल एक जो सारी मनुष्यजाति के पापों को अपने ऊपर ले सकता था, वह परमेश्वर का पाप-रहित पुत्र ही था। कई बड़े-बड़े धार्मिक गुरु हुए हैं, परन्तु उद्धारकर्ता केवल एक ही है: यीशु मसीह। यीशु ने कहा, ''*मार्ग* और *सच्चाई* और *जीवन* मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता'' (यूहन्ना 14:6)।[7]

उद्धार पाने से पहले, आप के लिए इन तीन महत्वपूर्ण सच्चाइयों को स्वीकार करना आवश्यक है: (1) यीशु परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र है।[8] (2) मसीह आपके लिए क्रूस पर मरा। (3) आप अपना उद्धार स्वयं नहीं कर सकते; आप का उद्धार केवल यीशु के बलिदान के द्वारा ही हो सकता है।

सारांश

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप पढ़े-लिखे हैं या अनपढ़, धनी हैं या निर्धन, आकर्षक हैं या अनाकर्षक, आपकी चमड़ी काली है या गोरी, आप सफल हैं या असफल (मनुष्यों के मापदण्डों के अनुसार); *परमेश्वर आपसे प्रेम करता है।* वह आपसे इतना प्रेम करता है कि उसने आपके लिए अपने प्रिय पुत्र को मरने के लिए भेज दिया। यदि आपने पहले नहीं पढ़ा है तो आपको चाहिए कि यहीं पर छोड़कर आप क्रूस पर यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के इन वृत्तांतों को पढ़ें (मत्ती 26-28; मरकुस 14-16; लूका 22-24; यूहन्ना 18-21)।

पौलुस ने लिखा, ''मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया'' (गलतियों 2:20ख)। इन शब्दों को ऊंचे स्वर से कहें: ''यीशु मुझ से प्रेम करता है, और उसने मेरे लिए अपने आपको दे दिया।'' इन शब्दों का स्वाद लीजिए। वे सचमुच में सत्य हैं!

पाद टिप्पणियां

[1]उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति द्वारा कोई भयंकर अपराध करने पर, तो उसके बच्चों को शर्मिंदगी और अपमान (उसके अनुचित कार्य के *परिणामस्वरूप*) सहना पड़ सकता है, परन्तु अपने उस अपराध के लिए जेल में केवल वह ही जाएगा। (केवल वह ही *दोषी* होगा।) [2]एक यहूदी लड़का अपने तेरहवें जन्म दिन पर बार मित्ज़वा मनाता है (''बार मित्ज़वा'' का अर्थ है ''आज्ञा [अथवा व्यवस्था] का पुत्र'')। बारह वर्ष की आयु में यीशु फसह के पर्व में गया (लूका 2:41, 42)। [3]विभिन्न अनुवादों में ''अपराध'' के लिए बहुत से यूनानी शब्द हैं; परन्तु मैं गलतियों 3:19 में उपयोग किए गए यूनानी शब्द को ले रहा हूं, जिसका अर्थ हिन्दी शब्द के समान ही है। [4]रोमियों 7:19, 20 देखिए। [5]पाप के लिए एक और पर्याय है ''[परमेश्वर की] व्यवस्था का विरोध''। (देखिए 1 यूहन्ना 3:4.) और भी पर्याय हैं, जैसे कि, ''दुष्टता,'' और ''अवज्ञा''; परन्तु मैंने पाप के क्षेत्र को चित्रित करने के लिए ''पाप,'' ''अपराध,'' और ''अधर्म'' आदि शब्दों का ही चयन किया है। [6]परमेश्वर को पूरी तरह से समझने के लिए, हमें परमेश्वर के समान बनना होगा। [7]इटैलिक्स करने से बल देने का संकेत मूल लेख में मिलता है। [8]इसमें यीशु के पुनरुत्थान में विश्वास सम्मिलित है (देखिए रोमियों 10:9)। स्थान हमें पुनरुत्थान पर और समय बिताने की अनुमति नहीं देता, जो कि अपने आप में एक रोमांचकारी अध्ययन है। यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं कि यीशु ईश्वरीय है, तो आपको इस व्यापक विषय पर अध्ययन करना चाहिए। यदि आपने अध्ययन नहीं किया, तो इस पुस्तक के अन्तिम पाठ में ''विश्वास करने के लिए चुनौती'' के अतिरिक्त लेख को पढ़िये। साथ ही, मैं आपको इस पर उस व्यक्ति के साथ बात करने के लिए कहूंगा जिसने आपको यह पुस्तक दी है। पुन, यह सम्भव है कि आपकी मुख्य आवश्यकता उस बात से अधिक परिचित होने की है जो यीशु के बारे में बाइबल सिखाती है (देखिए यूहन्ना 20:30, 31)। यीशु में अपने विश्वास को दृढ़ करने के लिए, नये नियम की पहली चार पुस्तकों को, जो यीशु के जीवन के बारे में बताती हैं, पढ़ने के लिए जितना भी समय लगा सकते हैं, लगाइए।